विशद

जिनसहस्रनाम

माण्डला

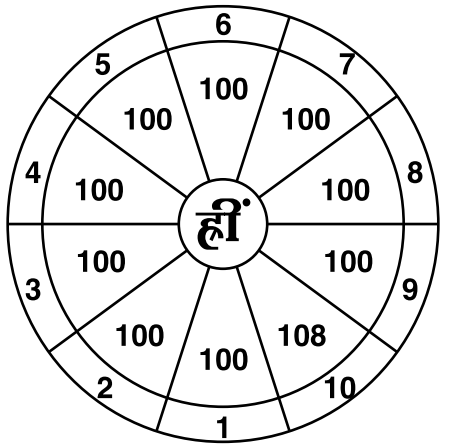

रचयिता : प. पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज

:: अर्थ सौजन्य ::
सुभाष सेठी
सी–119, श्याम नगर, जयपुर (राज.) मो.: 09414077840

मुद्रक : पारस प्रकाशन, दिल्ली. मो.: 09818394651, 09811363613

कृति	:	**विशद जिनसहस्रनाम विधान**
कृतिकार	:	प. पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज
संस्करण	:	प्रथम-2015 ' प्रतियाँ : 1000
संकलन	:	मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज
सहयोगी	:	क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागरजी महाराज क्षु. श्री भक्तिभारती माताजी क्षु. श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन	:	ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 ब्र. आस्था दीदी 9660996425, ब्र. सपना दीदी , ब्र. आरती दीदी
प्राप्ति स्थल	:	1. विशद साहित्य केन्द्र श्री दिगम्बर जैन मंदिर कुआँ वाला जैनपुरी रेवाड़ी द्धहरियाणाऋ, 9812502062, 09416888879 2. विशद साहित्य केन्द्र, हरीश जैन जय अरिहन्त ट्रेडर्स, 6561 नेहरू गली नियर लाल बत्ती चौक, गांधी नगर, दिल्ली मो. 09818115971, 09136248971

जिनसहस्रनाम विधान व्रत विधि

शास्त्रों में अनेक प्रकार के व्रत करने का विधान है। ''मराठी व्रत कथा संग्रह'' में सहस्रनाम व्रत करने की विधि बतलाई गई है। इस व्रत में श्री जिनेन्द्रदेव के एक हजार आठ नामों के एक हजार आठ व्रत करने को कहा है। व्रत की उत्तम विधि उपवास है, मध्यम विधि में नीरस पेय आदि लेना चाहिए और जघन्यतर विधि में एकाशन करके भी व्रत किया जाता है। इस व्रत को ''रानी चेलना'' ने श्री गौतमस्वामी से ग्रहण करके किया था ऐसा ''मराठी व्रत कथा संग्रह'' में कहा है।

व्रत के दिन जिनप्रतिमा का पंचामृत अभिषेक करके श्री आदिनाथ भगवान की एवं सहस्रनाम की पूजन करना चाहिये। पुनः प्रत्येक व्रत में क्रम से एक-एक मंत्र की पूजा व जाप्य भी कर सकते हैं। जैसे प्रथम व्रत में भगवान के सहस्रनामों में प्रथम नाम ''श्रीमान्'' है, उसकी पूजन और जाप्य इस प्रकार हैं–

ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेंद्र। अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेंद्र। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्रीमन् जिनेंद्र। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।
ॐ ह्रीं श्रीमते जन्मजरामत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीमते मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य–उदकचंदनतंदुलपुष्पकैः, चरुसुदीपसुधूपफलार्घ्यकैः।
धवलमंगलगानरवाकुलैः जिनगृहे जिनराजमहं यजे॥

ॐ ह्रीं श्रीमते अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्य....

शांतये शांतिधारा दिव्य पुष्पांजलिः।

इस प्रकार पूजन करके इसी मंत्र का जाप्य करें।
जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीमते नमः।

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीं गोमुखयक्षचक्रेश्वरीयक्षी सहिताय अष्टोत्तर सहस्रनामधारक श्री वृषभजिनेन्द्राय नमः।

द्वितीय व्रत में–ॐ ह्रीं स्वयंभूजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्! इत्यादि प्रकार से आह्वानन करके–

''ॐ ह्रीं स्वयंभुवे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं'' इत्यादि बोलकर अष्ट द्रव्य से पूजन करके ''ॐ ह्रीं स्वयंभुवे नमः'' मंत्र की जाप्य करें। इसी प्रकार प्रत्येक मंत्र की पूजा में नामवाची शब्द में ''जिनेन्द्र'' शब्द लगाकर संबोधन विभक्ति से आह्वानन करके चतुर्थी विभक्ति लगाकर पूजन करना चाहिए जैसा कि मंत्रों में चतुर्थी विभक्ति ही है।

इस व्रत के उद्यापन में ''बृहत् सहस्रनाम मंडल विधान'' करके 1008 कमल पुष्पों को चढ़ाकर 1008 कलशों से जिनप्रतिमा का महा अभिषेक करना चाहिए। अपनी शक्ति के अनुसार जिनप्रतिमा, जिनमंदिर आदि का निर्माण कराकार पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदि कराना चाहिए। यथाशक्ति मंदिर में उपकरणदान, चतुर्विध संघ को चतुर्विध दान आदि देकर धर्मप्रभावना पूर्वक उद्यापन करके व्रत पूर्ण करना चाहिए।

लघु सहस्रनाम व्रत विधि

महाराष्ट्र, राजस्थान आदि प्रांतों में व साधु संघों में सहस्रनाम व्रत में ग्यारह उपवास करने की भी परंपरा है। इसमें भी उपवास के दिन सहस्रनाम पूजा करके 1008 मंत्रों को पढ़कर समुच्चय जाप्य करना चाहिए। सहस्रनाम स्तोत्र पढ़कर एक-एक अध्याय के अंत में अर्घ्य चढ़ाने की भी परंपरा है। इस प्रकार विधिवत् पूजन करके समुच्चय जाप्य ऊपर दी गई है।

ग्यारह व्रतों में नीचे लिखी अलग-अलग जाप्य भी कर सकते हैं–

1. ॐ ह्री श्रीमदादिशतानामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
2. ॐ ह्रीं दिव्यभाषापत्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
3. ॐ ह्रीं स्थविष्ठादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
4. ॐ ह्रीं महाशोकध्वजदिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
5. ॐ ह्रीं श्री वृक्षलक्षणादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
6. ॐ ह्रीं महामुन्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
7. ॐ ह्रीं असंस्कृतादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
8. ॐ ह्रीं वृहद्वृहस्पत्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
9. ॐ ह्रीं त्रिकलदर्श्यादिशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।

10. ॐ ह्रीं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।
11. ॐ ह्रीं श्रीमदादि-अष्टोत्तरसहस्रनामधारकाय श्री जिनेंद्राय नमः।

इस व्रत को भी पूर्ण करके ''सहस्रनाम मंडल विधान'' करके यथाशक्ति उद्यापन करना चाहिए।

इस सहस्रनाम व्रत के प्रभाव से भव्य जीव नाना सुखों को भोगकर अंत में एक हजार आठ लक्षण व नाम के धारक ऐसे जिनेंद्रदेव के पद को प्राप्त करने में समर्थ हो सकते हैं। जो इस व्रत को नहीं कर सकते वे भी यदि सहस्रनाम मंत्रों को पढ़ेंगे और पूजा करेंगे तो नियम से धन-धान्य व सुख-शांति को प्राप्त करेंगे एवं अपनी स्मरण शक्ति व सम्यग्ज्ञान को वृद्धिगंत करते हुए जीवन में चारित्र को ग्रहण कर महान् बनेंगे और परंपरा से मोक्ष प्राप्त करने के अधिकारी हो जावेंगे।

प.पू. आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज अब तक 130 पूजन विधानों की रचना कर चुके उन्हीं में से एक यह सहस्रनाम विधान भी है। अधिकाधिक संख्या में सहस्रनाम पाठ व विधान कर जीवन को सौभाग्यशाली बनाएँ।

संकलन-मुनि विशाल सागर

जिन सहस्रनाम पूजा

स्थापना

वृषभादिक चौबिस तीर्थंकर, तीन लोक में पूज्य महान।
एक हजार आठ गुण धारी, जिनका हम करते गुणगान॥
सहस्रनाम की पूजा करते, मन में होके भाव विभोर।
आह्वानन् करते हम उर में, विशद शांति हो चारों ओर॥

ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्मसाम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्मसाम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभनाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री मदादिधर्म साम्राज्यनायकान्त अष्टाधिक सहस्र शुभानाम धारक श्री जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(ज्ञानोदय छन्द)

भटक रहे चारों गतियों में, पल भर शांति न मिल पाई।
सुख समझा जिन विषयों को, वह रहे घोर दुख की खाई॥
अब जन्म जरादिक नाश हेतु, हम पावन नीर चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप में झुलस रहे हम, ज्वाला निज में धधक रही।
भ्रमित हुए अज्ञान तिमिर में, मिली ना हमको राह सही॥
शीतल चन्दन केसर पावन, सुरभित यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग की खोटी इच्छाओं ने, मन मैला कर डाला है।
मोह कषायों ने आतम को, किया सदा ही काला है।
अक्षय निधि पाने यह पावन, अक्षत यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

जलकर काम रोग की ज्वाला, क्षण क्षण हमें जलाती है।
जितना उसको शांत करें वह, उतनी बढ़ती जाती है।
हम काम बाण के नाश हेतु, ये पावन पुष्प चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

लख चौरासी योनी में हम, भोजन को ही भटकाए।
मन चाहे खाने पर भी हम, तृप्त कभी ना हो पाए।
इस क्षुधा रोग के नाश हेतु, ये व्यंजन सरस चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथ्यातम के नाश हेतु, यह ज्ञान दीप प्रजलाया है।
सोया था उपमान ज्ञान का, हमने आज जगाया है।।
हम दीप जलाकर हे स्वामी, तव चरण आरती गाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु भक्ति वन्दना करके हम, चेतन की शक्ति जगाएँगे।
जग के व्यापारों को तजकर, निज गुण अपने प्रगटाएँगे।
अब अष्ट कर्म के शमन हेतु, पावन ये धूप जलाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब अशुभ भाव का फल पाके, दुर्गति के भाजन बन जाते।
शुभ भाव बनाकर भक्ती से, नर सुर गति धर संयम पाते।
अब रत्नत्रय का फल पाने, फल ताजे यहाँ चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दनादि यह द्रव्य आठ, हमने सब यहाँ मिलाए हैं।
जो है अनर्घ्य पद का कारण, वह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अब पद अनर्घ्य पाने स्वामी, ये पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
श्री सहस्रनाम की पूजा करके, मन में बहु हर्षाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय अनर्घ्य पदप्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- नाथ कृपा बरसाइये, भक्त करें अरदास।
शिवपथ के राही बनें, पूरी हो मम आस।।

(शांतये शांतिधारा)

गुण अनन्त के कोष जिन, सहस्र आठ हैं नाम।
पुष्पांजलिं करते 'विशद', करके चरण प्रणाम।।

(पुष्पांजलिं क्षिपेत्)

जयमाला

दोहा- सहसनाम जिनराज के, गाये मंगलकार।
जयमाला गाते विशद, नत हो बारम्बार॥

(ताटंक छन्द)

तीन लोक के स्वामी जिनवर, केवलज्ञान के धारी हैं।
कर्मघातिया के हैं नाशी, पूर्ण रूप अविकारी हैं॥
पूर्व भवों के पुण्योदय से, पावन नर भव पाते हैं।
उत्तम कुल वय देह सुसंगति, धर्म भावना भाते हैं॥1॥
देव शास्त्र गुरू के दर्शन भी, पुण्य योग से मिलते हैं।
सम्यक् दर्शन ज्ञान आचरण, तप के उपवन खिलते है॥
केवल ज्ञान के धारी हों या, तीर्थंकर का समवशरण।
तीर्थंकर प्रकृति पाते हैं, भव्य जीव करते दर्शन॥2॥
सोलहकारण भव्य भावना, भव्य जीव जो भाते हैं।
पावन तीर्थंकर प्रकृति शुभ, बन्ध तभी कर पाते हैं॥
नरक गती का बन्ध ना हो तो, स्वर्गों में प्राणी जावें।
तीर्थंकर प्रकृति के फल से, भव्य जीव भव सुख पावें॥3॥

गर्भ कल्याणक में सुर आके, दिव्य रत्न वर्साते हैं।
गर्भ कल्याणक के अवसर पर, मेरु पें न्हवन कराते हैं॥
दीक्षा ज्ञान कल्याण मनाकर, पूजा पाठ रचाते हैं।
सहस्रनाम के द्वारा प्रभु पद, जय जय कार लगाते हैं॥4॥
एक हजार आठ शुभ प्रभु के, सार्थक नाम बताए हैं।
जिनकी अर्चा करके प्राणी, निज सौभाग्य जगाए हैं।
मंत्र कहा प्रत्येक नाम शुभ, उनका करते हैं जो जाप।
'विशद' भाव से ध्याने वालों, के कट जाते सारे पाप॥5॥

दोहा- सहसनाम जिनदेव के, गाये मंगलकार।
उनको ध्याए भाव से, पाए सौख्य अपार॥

ॐ ह्रीं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारकाय श्री जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- पूजा करने के लिए, सहसनाम की आज।
आये हैं तव चरण में, पूर्ण करो मम काज॥
॥पुष्पांजलिं क्षिपामि॥ ॥इत्याशीर्वादः॥

जिन सहस्रनाम विधान

दोहा– श्री जिनवर के हैं विशद, सहस्राष्ट शुभ नाम।
नाम मंत्र का जाप कर, जिन पद करें प्रणाम॥

अथ मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

प्रथम शतकः

1. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीमते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
2. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वयंभुवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
3. ॐ ह्रीँ अर्हं वृषभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
4. ॐ ह्रीँ अर्हं शम्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
5. ॐ ह्रीँ अर्हं शम्भवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
6. ॐ ह्रीँ अर्हं आत्मभुवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
7. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वयं प्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
8. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
9. ॐ ह्रीँ अर्हं भोक्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
10. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वभुवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
11. ॐ ह्रीँ अर्हं अपुनर्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

12. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
13. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वलोकेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
14. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वतश्चक्षुषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
15. ॐ ह्रीँ अर्हं अक्षराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
16. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
17. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वविद्येशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
18. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वयोनये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
19. ॐ ह्रीँ अर्हं अनश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
20. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वदृश्वने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
21. ॐ ह्रीँ अर्हं विभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
22. ॐ ह्रीँ अर्हं धात्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
23. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
24. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वलोचनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
25. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वव्यापिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
26. ॐ ह्रीँ अर्हं विधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
27. ॐ ह्रीँ अर्हं वेधसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
28. ॐ ह्रीँ अर्हं शाश्वताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
29. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वतोमुखाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
30. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वकर्मणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।

31. ॐ ह्रीँ अर्हं जगज्ज्येष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
32. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्व मूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
33. ॐ ह्रीँ अर्हं जिनेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
34. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वदृशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
35. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वभूतेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
36. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
37. ॐ ह्रीँ अर्हं अनीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
38. ॐ ह्रीँ अर्हं जिनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
39. ॐ ह्रीँ अर्हं जिष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
40. ॐ ह्रीँ अर्हं अमेयात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
41. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वरीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
42. ॐ ह्रीँ अर्हं जगत्पतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
43. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्तजिते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
44. ॐ ह्रीँ अर्हं अचिन्त्यात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
45. ॐ ह्रीँ अर्हं भव्य बन्धवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
46. ॐ ह्रीँ अर्हं अबन्धनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
47. ॐ ह्रीँ अर्हं युगादि पुरुषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
48. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
49. ॐ ह्रीँ अर्हं पञ्च ब्रह्मयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

50. ॐ ह्रीँ अर्हं शिवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
51. ॐ ह्रीँ अर्हं पराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
52. ॐ ह्रीँ अर्हं परतराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
53. ॐ ह्रीँ अर्हं सूक्ष्माय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
54. ॐ ह्रीँ अर्हं परमेष्ठिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
55. ॐ ह्रीँ अर्हं सनातनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
56. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वयं ज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
57. ॐ ह्रीँ अर्हं अजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
58. ॐ ह्रीँ अर्हं अजन्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
59. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मयोनये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
60. ॐ ह्रीँ अर्हं अयोनिजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
61. ॐ ह्रीँ अर्हं मोहारये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
62. ॐ ह्रीँ अर्हं विजयिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
63. ॐ ह्रीँ अर्हं जेत्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
64. ॐ ह्रीँ अर्हं चक्रिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
65. ॐ ह्रीँ अर्हं दयाध्वजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
66. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशान्ताराये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
67. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्तात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
68. ॐ ह्रीँ अर्हं योगिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।

69. ॐ ह्रीँ अर्हं योगीश्वरार्चिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
70. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
71. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्म तत्त्वज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
72. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मोद्याविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
73. ॐ ह्रीँ अर्हं यतीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
74. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
75. ॐ ह्रीँ अर्हं बुद्धाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
76. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रबुद्धात्माने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
77. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धार्थाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
78. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्ध शासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
79. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्ध सिद्धान्तविद नमः अर्घं नि. स्वाहा।
80. ॐ ह्रीँ अर्हं ध्येयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
81. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्ध साध्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
82. ॐ ह्रीँ अर्हं जगद्धिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
83. ॐ ह्रीँ अर्हं सहिष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
84. ॐ ह्रीँ अर्हं अच्युताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
85. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
86. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रभविष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
87. ॐ ह्रीँ अर्हं भवोद्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

88. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रभूष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
89. ॐ ह्रीँ अर्हं अजराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
90. ॐ ह्रीँ अर्हं अजर्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
91. ॐ ह्रीँ अर्हं भ्राजिष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
92. ॐ ह्रीँ अर्हं धीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
93. ॐ ह्रीँ अर्हं अव्ययाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
94. ॐ ह्रीँ अर्हं विभावसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
95. ॐ ह्रीँ अर्हं असम्भूष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
96. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वयंभूष्णवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
97. ॐ ह्रीँ अर्हं पुरातनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
98. ॐ ह्रीँ अर्हं परमात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
99. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
100. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिजगत्परमेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– तीर्थंकर पद वन्दना, करते हम कर जोर।
हरी भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर॥1॥

ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीमदादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

द्वितिय शतकः

101. ॐ ह्रीँ अर्हं दिव्य भाषापतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

102. ॐ ह्रीँ अर्हं दिव्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
103. ॐ ह्रीँ अर्हं पूतवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
104. ॐ ह्रीँ अर्हं पूत शासन नमः अर्घं नि. स्वाहा।
105. ॐ ह्रीँ अर्हं पूतात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
106. ॐ ह्रीँ अर्हं परम ज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
107. ॐ ह्रीँ अर्हं धर्माध्यक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
108. ॐ ह्रीँ अर्हं दमीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
109. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
110. ॐ ह्रीँ अर्हं भगवते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
111. ॐ ह्रीँ अर्हं अर्हते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
112. ॐ ह्रीँ अर्हं अरजसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
113. ॐ ह्रीँ अर्हं विरजसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
114. ॐ ह्रीँ अर्हं शुचिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
115. ॐ ह्रीँ अर्हं तीर्थकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
116. ॐ ह्रीँ अर्हं केवलिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
117. ॐ ह्रीँ अर्हं ईशानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
118. ॐ ह्रीँ अर्हं पूजार्हाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
119. ॐ ह्रीँ अर्हं स्नातकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
120. ॐ ह्रीँ अर्हं अमलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

121. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्त दीप्तिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
122. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञानात्माने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
123. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वयं बुद्धाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
124. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रजापतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
125. ॐ ह्रीँ अर्हं मुक्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
126. ॐ ह्रीँ अर्हं शक्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
127. ॐ ह्रीँ अर्हं निराबाधाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
128. ॐ ह्रीँ अर्हं निष्कलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
129. ॐ ह्रीँ अर्हं भुवनेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
130. ॐ ह्रीँ अर्हं निरंजनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
131. ॐ ह्रीँ अर्हं जगत् ज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
132. ॐ ह्रीँ अर्हं निरुक्तोक्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
133. ॐ ह्रीँ अर्हं निरामयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
134. ॐ ह्रीँ अर्हं अचल स्थितये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
135. ॐ ह्रीँ अर्हं अक्षोभ्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
136. ॐ ह्रीँ अर्हं कूटस्थाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
137. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थाणवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
138. ॐ ह्रीँ अर्हं अक्षयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
139. ॐ ह्रीँ अर्हं अग्रण्ये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

140. ॐ ह्रीं अर्हं ग्रामण्ये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
141. ॐ ह्रीं अर्हं नेत्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
142. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणेत्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
143. ॐ ह्रीं अर्हं न्यायशास्त्रकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
144. ॐ ह्रीं अर्हं शास्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
145. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
146. ॐ ह्रीं अर्हं धर्म्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
147. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
148. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
149. ॐ ह्रीं अर्हं वृषध्वजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
150. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाधीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
151. ॐ ह्रीं अर्हं वृषकेतवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
152. ॐ ह्रीं अर्हं वृषायुधाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
153. ॐ ह्रीं अर्हं वृषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
154. ॐ ह्रीं अर्हं वृषपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
155. ॐ ह्रीं अर्हं भर्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
156. ॐ ह्रीं अर्हं वृषभाङ्काय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
157. ॐ ह्रीं अर्हं वृषोद्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
158. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यनाभये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

159. ॐ ह्रीं अर्हं भूतात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
160. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
161. ॐ ह्रीं अर्हं भूतभावनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
162. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
163. ॐ ह्रीं अर्हं विभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
164. ॐ ह्रीं अर्हं भास्वते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
165. ॐ ह्रीं अर्हं भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
166. ॐ ह्रीं अर्हं भावाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
167. ॐ ह्रीं अर्हं भवान्तकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
168. ॐ ह्रीं अर्हं हिरण्यगर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
169. ॐ ह्रीं अर्हं श्रीगर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
170. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतविभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
171. ॐ ह्रीं अर्हं अभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
172. ॐ ह्रीं अर्हं स्वयं प्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
173. ॐ ह्रीं अर्हं प्रभूतात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
174. ॐ ह्रीं अर्हं भूतनाथाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
175. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्प्रभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
176. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वादये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
177. ॐ ह्रीं अर्हं सर्वदृशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।

178. ॐ ह्रीँ अर्हं सार्वाये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
179. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
180. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वदर्शनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
181. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
182. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वलोकेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
183. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
184. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वलोक जिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
185. ॐ ह्रीँ अर्हं सुगतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
186. ॐ ह्रीँ अर्हं सुश्रुताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
187. ॐ ह्रीँ अर्हं सुश्रुते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
188. ॐ ह्रीँ अर्हं सुवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
189. ॐ ह्रीँ अर्हं सूरये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
190. ॐ ह्रीँ अर्हं बहुश्रुताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
191. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्रुताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
192. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वतपादाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
193. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वशीर्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
194. ॐ ह्रीँ अर्हं शुचिश्रवसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
195. ॐ ह्रीँ अर्हं सहस्रशीर्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
196. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रेत्रज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

197. ॐ ह्रीँ अर्हं सहस्राक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
198. ॐ ह्रीँ अर्हं सहस्रपदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
199. ॐ ह्रीँ अर्हं भूतभव्यभवद्भर्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
200. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वविद्या महेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– विशद भाव से हम यहाँ, करते विशद विधान।
सुख शांती सौभाग्य पा, पाएँ पद निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीँ अर्हं दिव्यभाषापत्यादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

तृतिय शतकः

201. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थविष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
202. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थविराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
203. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्येष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
204. ॐ ह्रीँ अर्हं पृष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
205. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रेष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
206. ॐ ह्रीँ अर्हं वरिष्ठधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
207. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थेष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
208. ॐ ह्रीँ अर्हं गरिष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
209. ॐ ह्रीँ अर्हं बंहिष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
210. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रेष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

211. ॐ ह्रीँ अर्हं अणिष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
212. ॐ ह्रीँ अर्हं गरिष्ठगिरे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
213. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वभृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
214. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वसृजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
215. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वेशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
216. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वभुजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
217. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वनायकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
218. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वाशिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
219. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वरूपात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
220. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वजिते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
221. ॐ ह्रीँ अर्हं विजितान्तकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
222. ॐ ह्रीँ अर्हं विभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
223. ॐ ह्रीँ अर्हं विभयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
224. ॐ ह्रीँ अर्हं वीराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
225. ॐ ह्रीँ अर्हं विशोकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
226. ॐ ह्रीँ अर्हं विजराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
227. ॐ ह्रीँ अर्हं अजरते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
228. ॐ ह्रीँ अर्हं विरागाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
229. ॐ ह्रीँ अर्हं विरताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

230. ॐ ह्रीँ अर्हं असंगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
231. ॐ ह्रीँ अर्हं विविक्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
232. ॐ ह्रीँ अर्हं वीतमत्सराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
233. ॐ ह्रीँ अर्हं विनेयजनताबन्धवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
234. ॐ ह्रीँ अर्हं विलीनाशेष कल्मषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
235. ॐ ह्रीँ अर्हं वियोगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
236. ॐ ह्रीँ अर्हं योगविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
237. ॐ ह्रीँ अर्हं विदुषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
238. ॐ ह्रीँ अर्हं विधात्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
239. ॐ ह्रीँ अर्हं सुविधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
240. ॐ ह्रीँ अर्हं सुधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
241. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षान्तिभाजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
242. ॐ ह्रीँ अर्हं पृथ्वी मूर्त्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
243. ॐ ह्रीँ अर्हं शान्तिभाजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
244. ॐ ह्रीँ अर्हं सलिलात्मकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
245. ॐ ह्रीँ अर्हं वायुमूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
246. ॐ ह्रीँ अर्हं असंगात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
247. ॐ ह्रीँ अर्हं वह्निमूर्त्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
248. ॐ ह्रीँ अर्हं अधर्मधृक् नमः अर्घं नि. स्वाहा।

249. ॐ ह्रीं अर्हं सुयज्वने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
250. ॐ ह्रीं अर्हं यजमानात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
251. ॐ ह्रीं अर्हं सुत्वने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
252. ॐ ह्रीं अर्हं सूत्रामपूजिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
253. ॐ ह्रीं अर्हं ऋत्विजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
254. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
255. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
256. ॐ ह्रीं अर्हं यज्ञाङ्गाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
257. ॐ ह्रीं अर्हं अमृताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
258. ॐ ह्रीं अर्हं हविषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
259. ॐ ह्रीं अर्हं व्योममूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
260. ॐ ह्रीं अर्हं अमूर्तात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
261. ॐ ह्रीं अर्हं निर्लेपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
262. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
263. ॐ ह्रीं अर्हं अचलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
264. ॐ ह्रीं अर्हं सोममूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
265. ॐ ह्रीं अर्हं सुसौम्यात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
266. ॐ ह्रीं अर्हं सूर्यमूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
267. ॐ ह्रीं अर्हं महाप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

268. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
269. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
270. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
271. ॐ ह्रीं अर्हं मन्त्रमूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
272. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
273. ॐ ह्रीं अर्हं स्वतन्त्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
274. ॐ ह्रीं अर्हं तन्त्रकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
275. ॐ ह्रीं अर्हं स्वान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
276. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
277. ॐ ह्रीं अर्हं कृतान्तकृत नमः अर्घं नि. स्वाहा।
278. ॐ ह्रीं अर्हं कृतिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
279. ॐ ह्रीं अर्हं कृतार्थाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
280. ॐ ह्रीं अर्हं सत्कृत्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
281. ॐ ह्रीं अर्हं कृतकृत्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
282. ॐ ह्रीं अर्हं कृतक्रतवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
283. ॐ ह्रीं अर्हं नित्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
284. ॐ ह्रीं अर्हं मृत्युंजयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
285. ॐ ह्रीं अर्हं अमृत्यवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।

286. ॐ ह्रीँ अर्हं अमृतात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
287. ॐ ह्रीँ अर्हं अमृतोद्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
288. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मनिष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
289. ॐ ह्रीँ अर्हं परंबह्ममणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
290. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
291. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मसम्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
292. ॐ ह्रीँ अर्हं महाब्रह्मपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
293. ॐ ह्रीँ अर्हं ब्रह्मेटे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
294. ॐ ह्रीँ अर्हं महाब्रह्मपदेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
295. ॐ ह्रीँ अर्हं सुप्रसन्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
296. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रसन्नात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
297. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञानधर्मदमप्रभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
298. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशमात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
299. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशान्तात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
300. ॐ ह्रीँ अर्हं पुराणपुरुषोत्तमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– तीर्थंकर चौबीस के, गणधर रहे महान।
पाकर यह जो ऋद्धियाँ, पाते पद निर्वाण॥3॥

ॐ ह्रीँ अर्हं स्थविष्ठादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा

चतुर्थ शतकः

301. ॐ ह्रीँ अर्हं महाशोकध्वजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
302. ॐ ह्रीँ अर्हं अशोकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
303. ॐ ह्रीँ अर्हं काय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
304. ॐ ह्रीँ अर्हं स्त्रष्ट्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
305. ॐ ह्रीँ अर्हं पद्मविष्टराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
306. ॐ ह्रीँ अर्हं पद्मेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
307. ॐ ह्रीँ अर्हं पद्मसम्भूतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
308. ॐ ह्रीँ अर्हं पद्मनाभये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
309. ॐ ह्रीँ अर्हं अनुत्तराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
310. ॐ ह्रीँ अर्हं पद्मयोनये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
311. ॐ ह्रीँ अर्हं जगद्योनये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
312. ॐ ह्रीँ अर्हं इत्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
313. ॐ ह्रीँ अर्हं स्तुत्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
314. ॐ ह्रीँ अर्हं स्तुतीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
315. ॐ ह्रीँ अर्हं स्तवनर्हाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
316. ॐ ह्रीँ अर्हं हृषीकेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
317. ॐ ह्रीँ अर्हं जितजेयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
318. ॐ ह्रीँ अर्हं कृतक्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

319. ॐ ह्रीं अर्हं गणाधिपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
320. ॐ ह्रीं अर्हं गणज्येष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
321. ॐ ह्रीं अर्हं गण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
322. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
323. ॐ ह्रीं अर्हं गणाग्रण्ये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
324. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाकराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
325. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाम्भोधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
326. ॐ ह्रीं अर्हं गुणज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
327. ॐ ह्रीं अर्हं गुणनायकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
328. ॐ ह्रीं अर्हं गुणादरीणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
329. ॐ ह्रीं अर्हं गुणोच्छेदिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
330. ॐ ह्रीं अर्हं निर्गुणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
331. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यगिरे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
332. ॐ ह्रीं अर्हं गुणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
333. ॐ ह्रीं अर्हं शरण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
334. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
335. ॐ ह्रीं अर्हं पूताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
336. ॐ ह्रीं अर्हं वरेण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
337. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यनायकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

338. ॐ ह्रीं अर्हं अगण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
339. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
340. ॐ ह्रीं अर्हं गुण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
341. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
342. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
343. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मारामाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
344. ॐ ह्रीं अर्हं गुणग्रामाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
345. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यायपुण्यनिरोधकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
346. ॐ ह्रीं अर्हं पापापेताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
347. ॐ ह्रीं अर्हं विपापात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
348. ॐ ह्रीं अर्हं विपाप्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
349. ॐ ह्रीं अर्हं वीतकल्मषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
350. ॐ ह्रीं अर्हं निर्द्वन्द्वाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
351. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
352. ॐ ह्रीं अर्हं शान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
353. ॐ ह्रीं अर्हं निर्मोहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
354. ॐ ह्रीं अर्हं निरुपद्रवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
355. ॐ ह्रीं अर्हं निर्निमेषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
356. ॐ ह्रीं अर्हं निराहाराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

357. ॐ ह्रीँ अर्हं निष्क्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
358. ॐ ह्रीँ अर्हं निरुपप्लवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
359. ॐ ह्रीँ अर्हं निष्कलंकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
360. ॐ ह्रीँ अर्हं निरस्तैनसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
361. ॐ ह्रीँ अर्हं निर्धूतागसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
362. ॐ ह्रीँ अर्हं निरास्रवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
363. ॐ ह्रीँ अर्हं विशालाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
364. ॐ ह्रीँ अर्हं विपुलज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
365. ॐ ह्रीँ अर्हं अतुलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
366. ॐ ह्रीँ अर्हं अचिन्त्य वैभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
367. ॐ ह्रीँ अर्हं सुसंवृताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
368. ॐ ह्रीँ अर्हं सुगुप्तामने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
369. ॐ ह्रीँ अर्हं सुभुजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
370. ॐ ह्रीँ अर्हं सुनयतत्त्वविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
371. ॐ ह्रीँ अर्हं एकविद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
372. ॐ ह्रीँ अर्हं महाविद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
373. ॐ ह्रीँ अर्हं मुनये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
374. ॐ ह्रीँ अर्हं परिवृढाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
375. ॐ ह्रीँ अर्हं पतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

376. ॐ ह्रीँ अर्हं धीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
377. ॐ ह्रीँ अर्हं विद्यानिधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
378. ॐ ह्रीँ अर्हं साक्षिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
379. ॐ ह्रीँ अर्हं विनेत्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
380. ॐ ह्रीँ अर्हं विहतान्तकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
381. ॐ ह्रीँ अर्हं पित्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
382. ॐ ह्रीँ अर्हं पितामहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
383. ॐ ह्रीँ अर्हं पात्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
384. ॐ ह्रीँ अर्हं पवित्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
385. ॐ ह्रीँ अर्हं पावनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
386. ॐ ह्रीँ अर्हं गतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
387. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रात्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
388. ॐ ह्रीँ अर्हं भिषग्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
389. ॐ ह्रीँ अर्हं वर्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
390. ॐ ह्रीँ अर्हं वरदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
391. ॐ ह्रीँ अर्हं परमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
392. ॐ ह्रीँ अर्हं पुन्से नमः अर्घं नि. स्वाहा।
393. ॐ ह्रीँ अर्हं कवये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
394. ॐ ह्रीँ अर्हं पुराणपुरुषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

395. ॐ ह्रीँ अर्हं वर्षीयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
396. ॐ ह्रीँ अर्हं वृषभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
397. ॐ ह्रीँ अर्हं पुरवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
398. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रतिष्ठा प्रभवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
399. ॐ ह्रीँ अर्हं हेतवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
400. ॐ ह्रीँ अर्हं भुवनैकपितामहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– मृत्युंजय शुभ मंत्र है, मृत्युंजय भगवान।
मृत्युंजय पद प्राप्त कर, पाएँ पद निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीँ अर्हं महाशोकध्वाजादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

पञ्चम शतकः

401. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीवृक्षलक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
402. ॐ ह्रीँ अर्हं श्लक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
403. ॐ ह्रीँ अर्हं लक्षण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
404. ॐ ह्रीँ अर्हं शुभलक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
405. ॐ ह्रीँ अर्हं निरक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
406. ॐ ह्रीँ अर्हं पुण्डरीकाक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
407. ॐ ह्रीँ अर्हं पुष्कलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
408. ॐ ह्रीँ अर्हं पुष्करेक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

409. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धिदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
410. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धसंकल्पाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
411. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
412. ॐ ह्रीँ अर्हं सिद्धसाधनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
413. ॐ ह्रीँ अर्हं बुद्धबोध्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
414. ॐ ह्रीँ अर्हं महाबोधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
415. ॐ ह्रीँ अर्हं वर्धमानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
416. ॐ ह्रीँ अर्हं महर्धिकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
417. ॐ ह्रीँ अर्हं वेदांगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
418. ॐ ह्रीँ अर्हं वेदविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
419. ॐ ह्रीँ अर्हं वेद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
420. ॐ ह्रीँ अर्हं जातरूपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
421. ॐ ह्रीँ अर्हं विदांवराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
422. ॐ ह्रीँ अर्हं वेदवेद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
423. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वसंवेद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
424. ॐ ह्रीँ अर्हं विवेदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
425. ॐ ह्रीँ अर्हं वदतांतवराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
426. ॐ ह्रीँ अर्हं अनादिनिधनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
427. ॐ ह्रीँ अर्हं व्यक्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

428. ॐ ह्रीँ अर्हं व्यक्तवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
429. ॐ ह्रीँ अर्हं व्यक्तशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
430. ॐ ह्रीँ अर्हं युगादिकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
431. ॐ ह्रीँ अर्हं युगाधाराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
432. ॐ ह्रीँ अर्हं युगादये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
433. ॐ ह्रीँ अर्हं जगदादिजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
434. ॐ ह्रीँ अर्हं अतीन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
435. ॐ ह्रीँ अर्हं अतीन्द्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
436. ॐ ह्रीँ अर्हं धीन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
437. ॐ ह्रीँ अर्हं महेन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
438. ॐ ह्रीँ अर्हं अतीन्द्रियार्थदृशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
439. ॐ ह्रीँ अर्हं अनिन्द्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
440. ॐ ह्रीँ अर्हं अहमिन्द्राच्यार्य नमः अर्घं नि. स्वाहा।
441. ॐ ह्रीँ अर्हं महेन्द्रमहिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
442. ॐ ह्रीँ अर्हं महते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
443. ॐ ह्रीँ अर्हं उद्भवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
444. ॐ ह्रीँ अर्हं कारणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
445. ॐ ह्रीँ अर्हं कर्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
446. ॐ ह्रीँ अर्हं पारगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

447. ॐ ह्रीँ अर्हं भवतारकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
448. ॐ ह्रीँ अर्हं अग्राह्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
449. ॐ ह्रीँ अर्हं गहनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
450. ॐ ह्रीँ अर्हं गुह्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
451. ॐ ह्रीँ अर्हं पराघ्यार्य नमः अर्घं नि. स्वाहा।
452. ॐ ह्रीँ अर्हं परमेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
453. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्तर्द्धये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
454. ॐ ह्रीँ अर्हं अमेयर्द्धये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
455. ॐ ह्रीँ अर्हं अचिन्त्यर्द्धये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
456. ॐ ह्रीँ अर्हं समग्रधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
457. ॐ ह्रीँ अर्हं प्राग्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
458. ॐ ह्रीँ अर्हं प्राग्रहराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
459. ॐ ह्रीँ अर्हं अभ्यग्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
460. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रत्यग्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
461. ॐ ह्रीँ अर्हं अग्रयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
462. ॐ ह्रीँ अर्हं अग्रिमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
463. ॐ ह्रीँ अर्हं अग्रजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
464. ॐ ह्रीँ अर्हं महातपसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
465. ॐ ह्रीँ अर्हं महातेजसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।

466. ॐ ह्रीँ अर्हं महोदर्काय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
467. ॐ ह्रीँ अर्हं महोदयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
468. ॐ ह्रीँ अर्हं महायशसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
469. ॐ ह्रीँ अर्हं महाधाम्ने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
470. ॐ ह्रीँ अर्हं महासत्त्वाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
471. ॐ ह्रीँ अर्हं महाधृतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
472. ॐ ह्रीँ अर्हं महाधैर्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
473. ॐ ह्रीँ अर्हं महावीर्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
474. ॐ ह्रीँ अर्हं महासंपदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
475. ॐ ह्रीँ अर्हं महाबलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
476. ॐ ह्रीँ अर्हं महाशक्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
477. ॐ ह्रीँ अर्हं महाज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
478. ॐ ह्रीँ अर्हं महाभूतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
479. ॐ ह्रीँ अर्हं महाद्युतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
480. ॐ ह्रीँ अर्हं महामतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
481. ॐ ह्रीँ अर्हं महानीतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
482. ॐ ह्रीँ अर्हं महाक्षान्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
483. ॐ ह्रीँ अर्हं महादयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
484. ॐ ह्रीँ अर्हं महाप्रज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

485. ॐ ह्रीँ अर्हं महाभागाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
486. ॐ ह्रीँ अर्हं महानन्दाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
487. ॐ ह्रीँ अर्हं महाकवये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
488. ॐ ह्रीँ अर्हं महामहसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
489. ॐ ह्रीँ अर्हं महाकीर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
490. ॐ ह्रीँ अर्हं महाकान्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
491. ॐ ह्रीँ अर्हं महावपुषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
492. ॐ ह्रीँ अर्हं महादानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
493. ॐ ह्रीँ अर्हं महाज्ञानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
494. ॐ ह्रीँ अर्हं महायोगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
495. ॐ ह्रीँ अर्हं महागुणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
496. ॐ ह्रीँ अर्हं महामहपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
497. ॐ ह्रीँ अर्हं प्राप्तमहापंचकल्याणकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
498. ॐ ह्रीँ अर्हं महाप्रभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
499. ॐ ह्रीँ अर्हं महाप्रातिहार्याधीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
500. ॐ ह्रीँ अर्हं महेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– नवग्रह शांती के लिए, पूजें जिन अर्हंत।
नव देवों की भक्ति से, होवे भव का अन्त।।5।।

ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीवृक्षादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

षष्ठम् शतकः

501. ॐ ह्रीँ अर्हं महामुनये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
502. ॐ ह्रीँ अर्हं महामौनिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
503. ॐ ह्रीँ अर्हं महाध्यानिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
504. ॐ ह्रीँ अर्हं महादमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
505. ॐ ह्रीँ अर्हं महाक्षमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
506. ॐ ह्रीँ अर्हं महाशीलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
507. ॐ ह्रीँ अर्हं महायज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
508. ॐ ह्रीँ अर्हं महामखाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
509. ॐ ह्रीँ अर्हं महाव्रतपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
510. ॐ ह्रीँ अर्हं मह्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
511. ॐ ह्रीँ अर्हं महाकान्तिधराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
512. ॐ ह्रीँ अर्हं अधिपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
513. ॐ ह्रीँ अर्हं महामैत्रीमयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
514. ॐ ह्रीँ अर्हं अमेयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
515. ॐ ह्रीँ अर्हं महोपायाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
516. ॐ ह्रीँ अर्हं महोमयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
517. ॐ ह्रीँ अर्हं महाकारुनिकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
518. ॐ ह्रीँ अर्हं मन्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।

519. ॐ ह्रीँ अर्हं महामन्त्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
520. ॐ ह्रीँ अर्हं महायतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
521. ॐ ह्रीँ अर्हं महानादाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
522. ॐ ह्रीँ अर्हं महाघोषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
523. ॐ ह्रीँ अर्हं महेज्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
524. ॐ ह्रीँ अर्हं महासांपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
525. ॐ ह्रीँ अर्हं महाध्वरधराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
526. ॐ ह्रीँ अर्हं धुर्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
527. ॐ ह्रीँ अर्हं महोदार्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
528. ॐ ह्रीँ अर्हं महिष्ठवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
529. ॐ ह्रीँ अर्हं महात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
530. ॐ ह्रीँ अर्हं महासांधाम्ने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
531. ॐ ह्रीँ अर्हं महर्षये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
532. ॐ ह्रीँ अर्हं महितोदयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
533. ॐ ह्रीँ अर्हं महाक्लेशांकुशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
534. ॐ ह्रीँ अर्हं शूराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
535. ॐ ह्रीँ अर्हं महाभूतपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
536. ॐ ह्रीँ अर्हं गुरवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
537. ॐ ह्रीँ अर्हं महापराक्रमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

538. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
539. ॐ ह्रीँ अर्हं महाक्रोधरिपवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
540. ॐ ह्रीँ अर्हं वशिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
541. ॐ ह्रीँ अर्हं महाभवाब्धिसंतारिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
542. ॐ ह्रीँ अर्हं महामोहाद्रि सूदनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
543. ॐ ह्रीँ अर्हं महागुणाकराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
544. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
545. ॐ ह्रीँ अर्हं महायोगीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
546. ॐ ह्रीँ अर्हं शमिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
547. ॐ ह्रीँ अर्हं महाध्यानपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
548. ॐ ह्रीँ अर्हं ध्यातमहाधर्मणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
549. ॐ ह्रीँ अर्हं महाव्रताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
550. ॐ ह्रीँ अर्हं कर्मारिघ्ने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
551. ॐ ह्रीँ अर्हं आत्मज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
552. ॐ ह्रीँ अर्हं महादेवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
553. ॐ ह्रीँ अर्हं महेशित्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
554. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वक्लेशापहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
555. ॐ ह्रीँ अर्हं साधवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
556. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वदोषहराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

557. ॐ ह्रीँ अर्हं हराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
558. ॐ ह्रीँ अर्हं असंख्येयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
559. ॐ ह्रीँ अर्हं अप्रमेयात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
560. ॐ ह्रीँ अर्हं शमात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
561. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशमाकराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
562. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वयोगीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
563. ॐ ह्रीँ अर्हं अचिन्त्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
564. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रुतात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
565. ॐ ह्रीँ अर्हं विष्टरश्रवसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
566. ॐ ह्रीँ अर्हं दान्तात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
567. ॐ ह्रीँ अर्हं दमतीर्थेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
568. ॐ ह्रीँ अर्हं योगात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
569. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञान सर्वज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
570. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रधानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
571. ॐ ह्रीँ अर्हं आत्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
572. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रकृतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
573. ॐ ह्रीँ अर्हं परमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
574. ॐ ह्रीँ अर्हं परमोदयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
575. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रक्षीणबन्धाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

576. ॐ ह्रीं अर्हं कामारये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
577. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
578. ॐ ह्रीं अर्हं क्षेमशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
579. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणवायनमः अर्घं नि. स्वाहा।
580. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणयायनमः अर्घं नि. स्वाहा।
581. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
582. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
583. ॐ ह्रीं अर्हं प्राणतेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
584. ॐ ह्रीं अर्हं प्रमाणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
585. ॐ ह्रीं अर्हं प्रणिधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
586. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
587. ॐ ह्रीं अर्हं दक्षिणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
588. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वर्यवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
589. ॐ ह्रीं अर्हं अध्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
590. ॐ ह्रीं अर्हं आनन्दाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
591. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
592. ॐ ह्रीं अर्हं नन्दाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
593. ॐ ह्रीं अर्हं वन्द्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
594. ॐ ह्रीं अर्हं अनिन्द्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

595. ॐ ह्रीं अर्हं अभिनन्दनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
596. ॐ ह्रीं अर्हं कामघ्ने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
597. ॐ ह्रीं अर्हं कामदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
598. ॐ ह्रीं अर्हं काम्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
599. ॐ ह्रीं अर्हं कामधेनवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
600. ॐ ह्रीं अर्हं अररिञ्जयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– स्वजन सभी अनुकूल हों, कर मृत्युंजय जाप।
जन्म-जन्म के शीघ्र ही, कट जाते हैं पाप॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं महामुन्यादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

सप्तम शतकः

601. ॐ ह्रीं अर्हं असंस्कृतसुसंस्काराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
602. ॐ ह्रीं अर्हं अप्राकृताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
603. ॐ ह्रीं अर्हं वेकृतान्तकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
604. ॐ ह्रीं अर्हं अन्तकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
605. ॐ ह्रीं अर्हं कान्तगवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
606. ॐ ह्रीं अर्हं कान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
607. ॐ ह्रीं अर्हं चिन्तामणये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
608. ॐ ह्रीं अर्हं अभीष्टदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

609. ॐ ह्रीँ अर्हं अजिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
610. ॐ ह्रीँ अर्हं जितकामारये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
611. ॐ ह्रीँ अर्हं अमिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
612. ॐ ह्रीँ अर्हं अमितशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
613. ॐ ह्रीँ अर्हं जितक्रोधाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
614. ॐ ह्रीँ अर्हं जितामित्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
615. ॐ ह्रीँ अर्हं जितक्लेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
616. ॐ ह्रीँ अर्हं जितान्तकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
617. ॐ ह्रीँ अर्हं जिनेन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
618. ॐ ह्रीँ अर्हं परमानन्दाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
619. ॐ ह्रीँ अर्हं मुनीन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
620. ॐ ह्रीँ अर्हं दुन्दुभिस्वनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
621. ॐ ह्रीँ अर्हं महेन्द्रवन्द्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
622. ॐ ह्रीँ अर्हं योगीन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
623. ॐ ह्रीँ अर्हं यतीन्द्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
624. ॐ ह्रीँ अर्हं नाभिनन्दनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
625. ॐ ह्रीँ अर्हं नाभेयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
626. ॐ ह्रीँ अर्हं नाभिजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
627. ॐ ह्रीँ अर्हं अजाताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

628. ॐ ह्रीँ अर्हं सुव्रताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
629. ॐ ह्रीँ अर्हं मनवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
630. ॐ ह्रीँ अर्हं उत्तमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
631. ॐ ह्रीँ अर्हं अभेद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
632. ॐ ह्रीँ अर्हं अनत्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
633. ॐ ह्रीँ अर्हं अनाश्वते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
634. ॐ ह्रीँ अर्हं अधिकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
635. ॐ ह्रीँ अर्हं अधिगुरवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
636. ॐ ह्रीँ अर्हं सुधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
637. ॐ ह्रीँ अर्हं सुमेधसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
638. ॐ ह्रीँ अर्हं विक्रमिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
639. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वामिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
640. ॐ ह्रीँ अर्हं दुराधर्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
641. ॐ ह्रीँ अर्हं निरुत्सुकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
642. ॐ ह्रीँ अर्हं विशिष्टाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
643. ॐ ह्रीँ अर्हं शिष्टभुजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
644. ॐ ह्रीँ अर्हं शिष्टाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
645. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रत्ययाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
646. ॐ ह्रीँ अर्हं कामनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

647. ॐ ह्रीँ अर्हं अनघाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
648. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षेमिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
649. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षेमंकरा नमः अर्घं नि. स्वाहा।
650. ॐ ह्रीँ अर्हं अक्षय्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
651. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षेमधर्मपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
652. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षमिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
653. ॐ ह्रीँ अर्हं अग्राह्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
654. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञान निग्राह्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
655. ॐ ह्रीँ अर्हं ध्यानगम्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
656. ॐ ह्रीँ अर्हं निरुत्तराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
657. ॐ ह्रीँ अर्हं सुकृतिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
658. ॐ ह्रीँ अर्हं धातवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
659. ॐ ह्रीँ अर्हं इज्यार्हाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
660. ॐ ह्रीँ अर्हं सुनयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
661. ॐ ह्रीँ अर्हं चतुराननाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
662. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीनिवासाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
663. ॐ ह्रीँ अर्हं चतुर्वक्त्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
664. ॐ ह्रीँ अर्हं चतुरास्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
665. ॐ ह्रीँ अर्हं चतुर्मुखाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

666. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्यात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
667. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्यविज्ञानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
668. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्यवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
669. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्यशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
670. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्याशिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
671. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्यसन्धानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
672. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
673. ॐ ह्रीँ अर्हं सत्यपरायणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
674. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थेयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
675. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थवीयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
676. ॐ ह्रीँ अर्हं नेदीयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
677. ॐ ह्रीँ अर्हं दवीयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
678. ॐ ह्रीँ अर्हं दूरदर्शनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
679. ॐ ह्रीँ अर्हं अणोरणी नमः अर्घं नि. स्वाहा।
680. ॐ ह्रीँ अर्हं अनणवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
681. ॐ ह्रीँ अर्हं गरीयसामाद्यगुरूवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
682. ॐ ह्रीँ अर्हं सदायोगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
683. ॐ ह्रीँ अर्हं सदाभोगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
684. ॐ ह्रीँ अर्हं सदातृप्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

685. ॐ ह्रीँ अर्हं सदाशिवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
686. ॐ ह्रीँ अर्हं सदागतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
687. ॐ ह्रीँ अर्हं सदासौख्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
688. ॐ ह्रीँ अर्हं सदाविद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
689. ॐ ह्रीँ अर्हं सदोदयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
690. ॐ ह्रीँ अर्हं सुघोषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
691. ॐ ह्रीँ अर्हं सुमुखाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
692. ॐ ह्रीँ अर्हं सौम्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
693. ॐ ह्रीँ अर्हं सुखदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
694. ॐ ह्रीँ अर्हं सुहिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
695. ॐ ह्रीँ अर्हं सुहदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
696. ॐ ह्रीँ अर्हं सुगुप्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
697. ॐ ह्रीँ अर्हं गुप्तिभृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
698. ॐ ह्रीँ अर्हं गोप्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
699. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकाध्यक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
700. ॐ ह्रीँ अर्हं दमेश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– मात्राएँ अट्ठावन विशेष, पाँचों पद में गाए जिनेश।
महामंत्र पूजते यहाँ आन, करते भावों से विशद ध्यान॥7॥

ॐ ह्रीँ अर्हं असंस्कृतादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

अष्ठम शतकः

701. ॐ ह्रीँ अर्हं वृहद्बृहस्पतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
702. ॐ ह्रीँ अर्हं वाग्मिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
703. ॐ ह्रीँ अर्हं वाचस्पतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
704. ॐ ह्रीँ अर्हं उदारधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
705. ॐ ह्रीँ अर्हं मनीषिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
706. ॐ ह्रीँ अर्हं धिषणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
707. ॐ ह्रीँ अर्हं धीमते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
708. ॐ ह्रीँ अर्हं शेमुषीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
709. ॐ ह्रीँ अर्हं गिरांपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
710. ॐ ह्रीँ अर्हं नैकरूपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
711. ॐ ह्रीँ अर्हं नयोत्तुङ्गाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
712. ॐ ह्रीँ अर्हं नैकात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
713. ॐ ह्रीँ अर्हं नैकधर्मकृतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
714. ॐ ह्रीँ अर्हं अविज्ञेयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
715. ॐ ह्रीँ अर्हं अप्रतर्क्यात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
716. ॐ ह्रीँ अर्हं कृतज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
717. ॐ ह्रीँ अर्हं कृतलक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
718. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञानगर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

719. ॐ ह्रीँ अर्हं दयागर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
720. ॐ ह्रीँ अर्हं रत्नगर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
721. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रभास्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
722. ॐ ह्रीँ अर्हं पद्मगर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
723. ॐ ह्रीँ अर्हं जगद्गर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
724. ॐ ह्रीँ अर्हं हेमगर्भाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
725. ॐ ह्रीँ अर्हं सुदर्शनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
726. ॐ ह्रीँ अर्हं लक्ष्मीवते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
727. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिदशाध्यक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
728. ॐ ह्रीँ अर्हं दृढीयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
729. ॐ ह्रीँ अर्हं इनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
730. ॐ ह्रीँ अर्हं ईशित्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
731. ॐ ह्रीँ अर्हं मनोहराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
732. ॐ ह्रीँ अर्हं मनोज्ञांगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
733. ॐ ह्रीँ अर्हं धीराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
734. ॐ ह्रीँ अर्हं गम्भीरशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
735. ॐ ह्रीँ अर्हं धर्मयूपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
736. ॐ ह्रीँ अर्हं दयायागाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
737. ॐ ह्रीँ अर्हं धर्मनेमये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

738. ॐ ह्रीँ अर्हं मुनीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
739. ॐ ह्रीँ अर्हं धर्मचक्रायुधाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
740. ॐ ह्रीँ अर्हं देवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
741. ॐ ह्रीँ अर्हं कर्मघ्ने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
742. ॐ ह्रीँ अर्हं धर्मघोषणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
743. ॐ ह्रीँ अर्हं अमोघवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
744. ॐ ह्रीँ अर्हं अमोघाज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
745. ॐ ह्रीँ अर्हं निर्मलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
746. ॐ ह्रीँ अर्हं अमोघशासनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
747. ॐ ह्रीँ अर्हं सुरूपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
748. ॐ ह्रीँ अर्हं सुभगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
749. ॐ ह्रीँ अर्हं त्यागिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
750. ॐ ह्रीँ अर्हं समयज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
751. ॐ ह्रीँ अर्हं समाहिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
752. ॐ ह्रीँ अर्हं सुस्थिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
753. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वस्थाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
754. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वास्थभाजे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
755. ॐ ह्रीँ अर्हं नीरजस्काय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
756. ॐ ह्रीँ अर्हं निरुद्धवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

757. ॐ ह्रीँ अर्हं अलेपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
758. ॐ ह्रीँ अर्हं निष्कलंकात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
759. ॐ ह्रीँ अर्हं वीतरागाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
760. ॐ ह्रीँ अर्हं गतस्पृहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
761. ॐ ह्रीँ अर्हं वश्येन्द्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
762. ॐ ह्रीँ अर्हं विमुक्तात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
763. ॐ ह्रीँ अर्हं निःसपत्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
764. ॐ ह्रीँ अर्हं जितेन्द्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
765. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
766. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्तधामर्षये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
767. ॐ ह्रीँ अर्हं मंगलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
768. ॐ ह्रीँ अर्हं मलघ्ने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
769. ॐ ह्रीँ अर्हं अनघाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
770. ॐ ह्रीँ अर्हं अनीदृशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
771. ॐ ह्रीँ अर्हं उपमा भूताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
772. ॐ ह्रीँ अर्हं दिष्टये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
773. ॐ ह्रीँ अर्हं दैवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
774. ॐ ह्रीँ अर्हं अगोचराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
775. ॐ ह्रीँ अर्हं अमूर्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

776. ॐ ह्रीँ अर्हं मूर्तिमते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
777. ॐ ह्रीँ अर्हं एकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
778. ॐ ह्रीँ अर्हं नैकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
779. ॐ ह्रीँ अर्हं नानैकतत्त्वदृशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
780. ॐ ह्रीँ अर्हं अध्यात्मगम्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
781. ॐ ह्रीँ अर्हं अगम्यातत्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
782. ॐ ह्रीँ अर्हं योगविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
783. ॐ ह्रीँ अर्हं योगवन्दिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
784. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वत्रगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
785. ॐ ह्रीँ अर्हं सदाभाविने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
786. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिकालविषयार्थदृशे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
787. ॐ ह्रीँ अर्हं शंकराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
788. ॐ ह्रीँ अर्हं शंवदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
789. ॐ ह्रीँ अर्हं दान्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
790. ॐ ह्रीँ अर्हं दमिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
791. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षान्तिपरायणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
792. ॐ ह्रीँ अर्हं अधिपाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
793. ॐ ह्रीँ अर्हं परमानन्दाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
794. ॐ ह्रीँ अर्हं परात्मज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

795. ॐ ह्रीँ अर्हं परात्पराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
796. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिजगद् वल्लभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
797. ॐ ह्रीँ अर्हं अभ्यर्च्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
798. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिजगन्मंगलोदयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
799. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिजगत्पतिपूजांघ्रये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
800. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिलोकाग्रशिखामणये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– णमोकार में पैंतिस अक्षर, मात्राएँ अट्ठावन जान।
मंगलोत्तम शुभ शरण भूत हैं, परमेष्ठी इह जगत महान॥8॥

ॐ ह्रीँ अर्हं वृहद् बृहस्पत्यादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

नवम शतकः

801. ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिकाल दर्शिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
802. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
803. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकधात्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
804. ॐ ह्रीँ अर्हं दृढव्रताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
805. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकातिगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
806. ॐ ह्रीँ अर्हं पूज्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
807. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वलोकैकसारथये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
808. ॐ ह्रीँ अर्हं पुराणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

809. ॐ ह्रीँ अर्हं पुरुषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
810. ॐ ह्रीँ अर्हं पूर्वाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
811. ॐ ह्रीँ अर्हं कृतपूर्वांगविस्ताराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
812. ॐ ह्रीँ अर्हं आदिदेवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
813. ॐ ह्रीँ अर्हं पुराणाद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
814. ॐ ह्रीँ अर्हं पुरुदेवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
815. ॐ ह्रीँ अर्हं अधिदेवतायै नमः अर्घं नि. स्वाहा।
816. ॐ ह्रीँ अर्हं युगमुख्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
817. ॐ ह्रीँ अर्हं युगज्येष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
818. ॐ ह्रीँ अर्हं युगादिस्थितिदेशकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
819. ॐ ह्रीँ अर्हं कल्याणवर्णाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
820. ॐ ह्रीँ अर्हं कल्याणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
821. ॐ ह्रीँ अर्हं कल्याण नमः अर्घं नि. स्वाहा।
822. ॐ ह्रीँ अर्हं कल्याणलक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
823. ॐ ह्रीँ अर्हं कल्याणप्रकृतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
824. ॐ ह्रीँ अर्हं दीप्त कल्याणात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
825. ॐ ह्रीँ अर्हं विकल्मषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
826. ॐ ह्रीँ अर्हं विकलंकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
827. ॐ ह्रीँ अर्हं कलातीताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

828. ॐ ह्रीँ अर्हं कलिलघ्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
829. ॐ ह्रीँ अर्हं कलाधराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
830. ॐ ह्रीँ अर्हं देवदेवाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
831. ॐ ह्रीँ अर्हं जगन्नाथाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
832. ॐ ह्रीँ अर्हं जगद्बन्धवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
833. ॐ ह्रीँ अर्हं जगद्विभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
834. ॐ ह्रीँ अर्हं जगद्धितैषिणे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
835. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
836. ॐ ह्रीँ अर्हं सर्वगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
837. ॐ ह्रीँ अर्हं जगदग्रजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
838. ॐ ह्रीँ अर्हं चराचरगुरवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
839. ॐ ह्रीँ अर्हं गोप्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
840. ॐ ह्रीँ अर्हं गूढात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
841. ॐ ह्रीँ अर्हं गूढगोचराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
842. ॐ ह्रीँ अर्हं सद्योजाताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
843. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रकाशात्मने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
844. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्वलज्ज्वलन सप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
845. ॐ ह्रीँ अर्हं आदित्यवर्णाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
846. ॐ ह्रीँ अर्हं भर्माभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

847. ॐ ह्रीँ अर्हं सुप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
848. ॐ ह्रीँ अर्हं कनकप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
849. ॐ ह्रीँ अर्हं सुवर्णवर्णाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
850. ॐ ह्रीँ अर्हं रुक्माभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
851. ॐ ह्रीँ अर्हं सूर्यकोटिसमप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
852. ॐ ह्रीँ अर्हं तपनीयनिभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
853. ॐ ह्रीँ अर्हं तुंगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
854. ॐ ह्रीँ अर्हं बालार्काभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
855. ॐ ह्रीँ अर्हं अनलप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
856. ॐ ह्रीँ अर्हं सन्ध्याभ्रवभ्रवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
857. ॐ ह्रीँ अर्हं हेमाभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
858. ॐ ह्रीँ अर्हं तप्तचामीकरच्छवये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
859. ॐ ह्रीँ अर्हं निष्टप्तकनकच्छायाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
860. ॐ ह्रीँ अर्हं कनत्काञ्चनसन्निभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
861. ॐ ह्रीँ अर्हं हिरण्यवर्णाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
862. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वर्णाभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
863. ॐ ह्रीँ अर्हं शातकुम्भनिभप्रभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
864. ॐ ह्रीँ अर्हं द्युम्नाभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
865. ॐ ह्रीँ अर्हं जातरूपाभाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

866. ॐ ह्रीँ अर्हं तप्त जाम्बूनदद्युतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
867. ॐ ह्रीँ अर्हं सुधौतकलधौतश्रिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
868. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रदीप्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
869. ॐ ह्रीँ अर्हं हाटकद्युतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
870. ॐ ह्रीँ अर्हं शिष्टेष्टाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
871. ॐ ह्रीँ अर्हं पुष्टिदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
872. ॐ ह्रीँ अर्हं पुष्टाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
873. ॐ ह्रीँ अर्हं स्पष्टाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
874. ॐ ह्रीँ अर्हं स्पष्टाक्षराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
875. ॐ ह्रीँ अर्हं क्षमाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
876. ॐ ह्रीँ अर्हं शत्रुघ्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
877. ॐ ह्रीँ अर्हं अप्रतिघाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
878. ॐ ह्रीँ अर्हं अमोघाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
879. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशास्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
880. ॐ ह्रीँ अर्हं शासित्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
881. ॐ ह्रीँ अर्हं स्वयंभवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
882. ॐ ह्रीँ अर्हं शान्तिनिष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
883. ॐ ह्रीँ अर्हं मुनिज्येष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
884. ॐ ह्रीँ अर्हं शिवतातये नमः अर्घं नि. स्वाहा।

885. ॐ ह्रीँ अर्हं शिवप्रदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
886. ॐ ह्रीँ अर्हं शान्तिदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
887. ॐ ह्रीँ अर्हं शान्तिकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
888. ॐ ह्रीँ अर्हं शान्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
889. ॐ ह्रीँ अर्हं कान्तिमते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
890. ॐ ह्रीँ अर्हं कामितप्रदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
891. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रेयोनिधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
892. ॐ ह्रीँ अर्हं अधिष्ठानाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
893. ॐ ह्रीँ अर्हं अप्रतिष्ठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
894. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रतिष्ठिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
895. ॐ ह्रीँ अर्हं सुस्थिराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
896. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थावराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
897. ॐ ह्रीँ अर्हं स्थाणवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
898. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रथीयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
899. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रथिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
900. ॐ ह्रीँ अर्हं पृथवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– आठ ऋद्धियों के होते हैं, अड़तालिस या चौंसठ भेद।
भाव सहित हम पूजा करते, नाश होय मम सारा खेद॥9॥

ॐ ह्रीँ अर्हं त्रिकालदर्श्यादिशतनामेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

दशम शतकः

901. ॐ ह्रीँ अर्हं दिग्वासे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
902. ॐ ह्रीँ अर्हं वात रसनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
903. ॐ ह्रीँ अर्हं निर्ग्रन्थेशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
904. ॐ ह्रीँ अर्हं दिगम्बराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
905. ॐ ह्रीँ अर्हं निःकिञ्चनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
906. ॐ ह्रीँ अर्हं निराशंसाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
907. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञानचक्षुषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
908. ॐ ह्रीँ अर्हं अमोमुहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
909. ॐ ह्रीँ अर्हं तेजोराशये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
910. ॐ ह्रीँ अर्हं अनन्तौजसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
911. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्ञानाब्धये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
912. ॐ ह्रीँ अर्हं शीलसागराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
913. ॐ ह्रीँ अर्हं तेजोमयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
914. ॐ ह्रीँ अर्हं अमितज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
915. ॐ ह्रीँ अर्हं ज्योतिर्मूर्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
916. ॐ ह्रीँ अर्हं तमोपहाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
917. ॐ ह्रीँ अर्हं जगच्चूडामणये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
918. ॐ ह्रीँ अर्हं दीप्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

919. ॐ ह्रीँ अर्हं शंवते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
920. ॐ ह्रीँ अर्हं विघ्नविनायकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
921. ॐ ह्रीँ अर्हं कलिघ्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
922. ॐ ह्रीँ अर्हं कर्मशत्रुघ्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
923. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकालोकप्रकाशकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
924. ॐ ह्रीँ अर्हं अनिद्रालवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
925. ॐ ह्रीँ अर्हं अतन्द्रालवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
926. ॐ ह्रीँ अर्हं जागरुकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
927. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रभामयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
928. ॐ ह्रीँ अर्हं लक्ष्मी पतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
929. ॐ ह्रीँ अर्हं जगज्ज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
930. ॐ ह्रीँ अर्हं धर्मराजाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
931. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रजाहिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
932. ॐ ह्रीँ अर्हं मुमुक्षवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
933. ॐ ह्रीँ अर्हं बन्धमोक्षज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
934. ॐ ह्रीँ अर्हं जिताक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
935. ॐ ह्रीँ अर्हं जितमन्मथाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
936. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रशान्तरसशैलूषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
937. ॐ ह्रीँ अर्हं भव्यपेटकनायकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

938. ॐ ह्रीँ अर्हं मूलकर्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
939. ॐ ह्रीँ अर्हं अखिलज्योतिषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
940. ॐ ह्रीँ अर्हं मलघ्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
941. ॐ ह्रीँ अर्हं मूलकारणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
942. ॐ ह्रीँ अर्हं आप्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
943. ॐ ह्रीँ अर्हं वागीश्वराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
944. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रेयसे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
945. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रायसोक्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
946. ॐ ह्रीँ अर्हं निरुक्तवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
947. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रवक्त्रे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
948. ॐ ह्रीँ अर्हं वचसामीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
949. ॐ ह्रीँ अर्हं मारजिते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
950. ॐ ह्रीँ अर्हं विश्वभावविदे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
951. ॐ ह्रीँ अर्हं सुतनवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
952. ॐ ह्रीँ अर्हं तनुनिर्मुक्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
953. ॐ ह्रीँ अर्हं सुगताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
954. ॐ ह्रीँ अर्हं हतदुर्नयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
955. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीशाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
956. ॐ ह्रीँ अर्हं श्रीश्रितपादाब्जाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

957. ॐ ह्रीँ अर्हं वीतभिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
958. ॐ ह्रीँ अर्हं अभयंकराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
959. ॐ ह्रीँ अर्हं उत्सन्नदोषाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
960. ॐ ह्रीँ अर्हं निर्विघ्नाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
961. ॐ ह्रीँ अर्हं निश्चलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
962. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकवत्सलाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
963. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकोत्तराय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
964. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकपतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
965. ॐ ह्रीँ अर्हं लोकचक्षुषे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
966. ॐ ह्रीँ अर्हं अपारधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
967. ॐ ह्रीँ अर्हं धीरधिये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
968. ॐ ह्रीँ अर्हं बुद्ध सन्मार्गाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
969. ॐ ह्रीँ अर्हं शुद्धाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
970. ॐ ह्रीँ अर्हं सूनृत पूतवाचे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
971. ॐ ह्रीँ अर्हं प्रज्ञापारमिताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
972. ॐ ह्रीँ अर्हं प्राज्ञाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
973. ॐ ह्रीँ अर्हं यतये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
974. ॐ ह्रीँ अर्हं नियमितेन्द्रियाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
975. ॐ ह्रीँ अर्हं भदन्ताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

976. ॐ ह्रीं अर्हं भद्रकृते नमः अर्घं नि. स्वाहा।
977. ॐ ह्रीं अर्हं भद्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
978. ॐ ह्रीं अर्हं कल्पवृक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
979. ॐ ह्रीं अर्हं वरप्रदाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
980. ॐ ह्रीं अर्हं समुन्मूलितकर्मारये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
981. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मकाष्ठाशुशुक्षणये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
982. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मण्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
983. ॐ ह्रीं अर्हं कर्मठाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
984. ॐ ह्रीं अर्हं प्रांशवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
985. ॐ ह्रीं अर्हं हेयादेयविचक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
986. ॐ ह्रीं अर्हं अनन्तशक्तये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
987. ॐ ह्रीं अर्हं अच्छेद्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
988. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिपुरारये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
989. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिलोचनाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
990. ॐ ह्रीं अर्हं त्रिनेत्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
991. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यम्बकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
992. ॐ ह्रीं अर्हं त्र्यक्षाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
993. ॐ ह्रीं अर्हं केवलज्ञानवीक्षणाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
994. ॐ ह्रीं अर्हं समन्तभद्राय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

995. ॐ ह्रीं अर्हं शान्तारये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
996. ॐ ह्रीं अर्हं धर्माचार्याय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
997. ॐ ह्रीं अर्हं दयानिधये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
998. ॐ ह्रीं अर्हं सूक्ष्मदर्शिने नमः अर्घं नि. स्वाहा।
999. ॐ ह्रीं अर्हं जितानंगाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1000. ॐ ह्रीं अर्हं कृपालवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1001. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मदेशकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1002. ॐ ह्रीं अर्हं शुभंयवे नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1003. ॐ ह्रीं अर्हं सुखसाद्भूताय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1004. ॐ ह्रीं अर्हं पुण्यराशये नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1005. ॐ ह्रीं अर्हं अनामयाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1006. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मपालाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1007. ॐ ह्रीं अर्हं जगत्पालाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।
1008. ॐ ह्रीं अर्हं धर्मसाम्राज्यनायकाय नमः अर्घं नि. स्वाहा।

दोहा– श्री जिनेन्द्र इस लोक में, मृत्युंजय दातार।
अतः पूजते जिनचरण, नत हो बारम्बार॥10॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिग्वासादिअष्टोत्तरशतनामेभ्योः नमः पूर्णार्घ्यं नि. स्वाहा।

इति सहस्रनाममंत्राः

सहस्रनाम चूलिका

चौपाई

विद्वानों से संचित देव, सहस आठ हैं नाम सुएव।
जो इनका करता है ध्यान, उनकी बुद्धी बढ़े महान।।1।।
विद्वत वर्णन किए विशेष, बचनागोचर आप जिनेश।
स्तुति करें जो भी सस्नेह, शुभ फल पाएँ निःसन्देह।।2।।
अतः आप हो बन्धु महान, जगत वैद्य हो आप प्रधान।
इस जग के रक्षक हे नाथ! जगत हितैषी भी हो साथ।।3।।
जगत प्रकाशक हे जिन एक, दर्श ज्ञान उपयोग अनेक।
दर्शज्ञान चारितत्रय रूप, अनन्त चतुष्टय चार स्वरूप।।4।।
प्रभो! पञ्च परमेष्ठि स्वरूप, पञ्च कल्याण नायक पनरूप।
जीवादिक छह द्रव्यों वान, सप्त नयों युत सप्त महान।।5।।
सम्यक्त्वादि आठ गुण रूप, नव लब्धी युत नौ स्वरूप।
महावलादि दश पर्यायवान, रक्षा करो, आप भगवान।।6।।
सहस्र आठ शुभ नाम की माल, से गाते प्रभु की जयमाल।
हम पर कृपा करो हे नाथ!, शिवपथ में प्रभु देना साथ।।7।।
जिनवर का जो भक्त महान, स्तुति करता है गुणगान।
पावन स्तोत्र का करके ध्यान, सब प्रकार से हो कल्याण।।8।।
इन्द्रों के वैभव का लोग, पाने का चाहें संयोग।

पुण्य बढ़ाना चाहो आप, करो स्तोत्र पाठ या जाप।।9।।
जग ये रहा चराचरवान, इन्द्र ने प्रभु का कर गुणगान।
करने प्रभु के तीर्थ विहार, निम्न प्रार्थना की शुभकार।।10।।
करने शुभ गुण का गुणगान, स्तुति करें भव्य गुणगान।
हो स्तुत्व पुरुषारथवान, स्तुति का फल मोक्ष निधान।।11।।

(शम्भू छन्द)

जग में जो स्तुत्य कहे हैं, स्तोता ना हैं गुणगान।
जिनका ध्यान करें योगीजन, वे ना किसी का करते ध्यान।।
जो नन्तव्य पक्ष का द्रष्टा, सबसे ही करवाए नमन।
श्री युत सर्व प्रधान लोक में, जिन त्रिलोक के हैं गुरुजन।।12।।
इन्द्रराज जिनके पद पूजे, जो हैं अनन्त चुष्टयवान।
भव्य जीव रूपी कमलों को, करें प्रफुल्लित जो गुणगान।।
मानस्तंभ देखने झुकते, समवशरण युत वैभववन्त।
पाप रहित आधीश्वर जिनको, भक्त नमन करते गुणवन्त।।13।।

।।इति सहस्रनाम स्तोत्र समाप्त।।

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीँ अर्हं अष्टोत्तर सहस्रनाम धारक श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

दोहा- सहस्रनाम द्वारा किया, जिनवर का गुणगान।
जयमाला गाते यहाँ, पाने शिव सोपान॥

चौपाई

जय-जय तीन लोक के स्वामी, त्रिभुवनपति हे अन्तर्यामी।
पूर्व भवों में पुण्य कमाया, पुण्योदय से नरभव पाया॥
तन निरोग पाकर के भाई, सुकुल प्राप्त कीन्हा सुखदायी।
तुमने उर में ज्ञान जगाया, अतिशय सम्यक् दर्शन पाया॥
भाव सहित संयम अपनाए, भव्य भावना सोलह भाए।
तीर्थंकर प्रकृति शुभ पाई, स्वर्गों के सुख भोगे भाई॥
गर्भादिक कल्याणक पाए, रत्न इन्द्र भारी बरषाए।
छह महीने पहले से भाई, देवों ने नगरी सजवाई॥
जन्म कल्याणक प्रभु जी पाये, सहस्राष्ट शुभ गुण प्रगटाए।
गुणानुरूप नाम भी पाए, सहस्र आठ संख्या में गाए॥
नाम सभी सार्थक हैं भाई, सहस्र नाम की महिमा गाई।
तीर्थंकर पदवी के धारी, नामों के होते अधिकारी॥
मंत्र सभी यह नाम कहाए, मंत्रों को श्रद्धा से गाए।
ऋद्धि-सिद्धि सौभाग्य जगाए, जो भी इनका ध्यान लगाए॥

महिमा का न पार है भाई, श्री जिनेन्द्र की है प्रभुताई।
जगत प्रकाशी जिन कहलाए, ज्ञानादर्श सुगुण प्रभु पाए॥
श्री जिनेन्द्र रत्नत्रय पाए, अनंत चतुष्टय प्रभु प्रगटाए।
धर्म चक्र शुभ प्रभु जी धारे, समवशरणयुत किए विहारे॥
समवशरण शुभ देव बनाते, श्री जिनवर की महिमा गाते।
प्राणी अतिशय पुण्य कमाते, पूजा अर्चा कर हर्षाते॥
जय-जयकार लगाते भाई, यह है जिनवर की प्रभुताई।
पुरुषोत्तम यह नाम कहाए, उनकी यह शुभ माल बनाए॥
अर्पित करते तव पद स्वामी, करते हम तव चरण नमामी।
नाथ! प्रार्थना यही हमारी, दो आशीष हमें त्रिपुरारी॥
रत्नत्रय की निधि हम पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।
शिव स्वरूप हम भी प्रगटाएँ, शिवपुर जाकर शिवसुख पाएँ॥

दोहा- सहस्रनाम का कंठ में, धारें कंठाहार।
विशद गुणों को प्राप्त कर, पावें शिव का द्वार॥

ॐ ह्रीँ अर्हं श्री अष्टाधिक सहस्रनाम धारक श्री जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- जिन गुण के अनुपम सुमन, जग में रहे महान्।
पुष्पांजलि कर पूजते, पाने पद निर्वाण॥

।।पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

सहस्रनाम चालीसा

दोहा- अर्हत्सिद्धाचार्य पद, उपाध्याय जिन संत।
सहस्रनाम जिनराज के, नमूँ अनन्तानन्त॥

(चौपाई छन्द)

है आकाश अनन्तानन्त, जिसका नहीं है कोई अंत।
जिसके मध्य है लोकाकाश, भरा है छह द्रव्यों से खास॥
ऊर्ध्व अधो अरु मध्य प्रधान, तीन लोक कहते भगवान।
मध्य लोक में जम्बू द्वीप, मेरू जम्बू वृक्ष समीप॥
जम्बू द्वीप घातकी खण्ड, पुष्करार्द्ध भी रहा अखण्ड।
भरतैरावत और विदेह, क्षेत्र कर्म भूमि का ऐह॥
आर्य खण्ड में रहते आर्य, ऐसा कहते जैनाचार्य।
उत्सर्पण अवसपर्ग काल, भरतैरावत रहे त्रिकाल॥
दुषमा सुषमा काल विशेष, जिसमें चौबिस बनें जिनेश।
जिन विदेह में रहे त्रिकाल, विद्यमान रहते हर हाल॥
जो भी पुण्य कमाय अतीव, उसका फल वह पावे जीव।
भव्य भावना सोलह भाय, जीव वही यह पदवी पाय॥
तीर्थकर प्रकृति का बंध, जो कषाय करते हैं मंद।
सम्यक् दृष्टी जीव महान, केवली द्विक के पद में आन॥

मिलता है जब कोई निमित्त, भोगों से उठ जाता चित्त।
भव भोगों से होय विरक्त, शुभ भोगों में हो अनुरक्त॥
सत् संयम पाते शुभकार, लेते महाव्रतों को धार।
कर्म निर्जरा करें महान, निज आतम का करके ध्यान॥
क्षायक श्रेणी को फिर पाय, अपना केवलज्ञान जगाय।
त्रिभुवन चूड़ामणि बन जाय, तीर्थंकर के गुण प्रगटाय॥
क्षायिक नव लब्धी कर प्राप्त, बनते जिन तीर्थंकर आप्त।
चिन्तित चिंतामणि कहलाय, कल्पतरू फल वांछित पाय॥
बनते समवशरण के ईश, इन्द्र झुकाते पद में शीश।
अनन्त चतुष्टय पाते नाथ, पंच कल्याणक भी हों साथ॥
तीन गति से आते जीव, पुण्य कमाते वहा अतीव।
दिव्य देशना सुनके लोग, मुक्ती पथ का पाते योग॥
भक्ती को आते शत् इन्द्र, सुर-नर-पशु आते अहमिन्द्र।
परम पिता जगती पति ईश, ऋद्धीधर हे नाथ! ऋशीष॥
युग दृष्टा प्रभु रहे महान, तीर्थोन्नायक हैं भगवान।
वाणी में जैनागम सार, अमृत रस की बहती धार॥
भक्त आपके आते द्वार, करते हैं निशदिन जयकार।
करने से प्रभु का गुणगान, होती है कर्मों की हान॥

महिमा गाकर के सब देव, हर्षित होते सभी सदैव।
हम भी महमा गाते नाथ!, चरणों झुका रहे हैं माथ॥
विविध नाम से है गुणगान, सहस्रनाम स्त्रोत महान।
सार्थक नाम मयी स्तोत्र, श्रेष्ठ धर्म का है जो स्त्रोत॥
सहस्रनाम कहलाए स्त्रोत, विशद धर्म का है जो स्त्रोत॥
श्रीमान आदिक हैं सहस्र नाम, को करते हम सतत् प्रणाम।
पाठ किए हो ज्ञान प्रकाश, विशद गुणों का होय विकास॥
वन्दन करते हम शत् बार, पाने भवोदधी से पार।
मेरा हो आतम कल्याण, पावें हम भी पद निर्वाण॥
दोहा- चालीसा चालीस दिन, सहस्रनाम का पाठ।
पढ़ते हैं जो भाव से, होते ऊँचे ठाठ॥
ऋद्धि-सिद्धि आनन्द हो, शांती मिले अपार॥
'विशद' ज्ञान पाके मिले, मुक्ति वधू का प्यार॥

प्रशस्ति

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य- खण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्ते मध्ये चैत्र मासे शुक्लपक्षे सप्तमी गुरुवासरे अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2541 वि.सं. 2071 विशद जिनसहस्रनाम विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

सहस्रनाम की आरती

आज करें हम सहस्रनाम की, आरति मंगलकारी।
दीप जलाकर लाए घृत के, जिनवर के दरबार...
हो जिनवर.....
हम सब उतारे मंगल आरती.....
सहस्रनाम के धारी जिनवर, सहस्र गुणों को पाते।
एक हजार आठ गुणधारी, तीर्थंकर कहलाते॥
हो जिनवर.....॥1॥
श्री जिनेन्द्र के तन में नौ सौ, व्यंजन विस्मयकारी।
सुगुण एक सौ आठ जिनेश्वर, पाते अतिशयकारी॥
हो जिनवर.....॥2॥
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिन इसके अधिकारी।
अनन्त चतुष्टय के धारी जिन, होते मंगलकारी॥
हो जिनवर.....॥3॥
सार्थक नाम प्राप्त करते हैं, तीर्थंकर अविकारी।
अनुक्रम से बन जाते हैं जो, शिवपद के अधिकारी॥
हो जिनवर.....॥4॥
सहस्रनाम की पूजा अर्चा, करने को हम आए।
'विशद' जगे सौभाग्य हमारे, चरण-शरण को पाए॥
हो जिनवर.....॥5॥

प. पू. आचार्य गुरुवर श्री विशदसागरजी का चालीसा

दोहा– क्षमा हृदय है आपका, विशद सिन्धु महाराज।
दर्शन कर गुरुदेव के, बिगड़े बनते काज॥
चालीसा लिखते यहाँ, लेकर गुरु का नाम।
चरण कमल में आपके, बारम्बार प्रणाम॥

(चौपाई)

जय श्री 'विशद सिन्धु' गुणधरी, दीनदयाल बाल ब्रह्मचारी।
भेष दिगम्बर अनुपम धरे, जन-जन को तुम लगते प्यारे॥
नाथूराम के राजदुलारे, इंदर माँ की आँखों के तारे।
नगर कुपी में जन्म लिया है, पावन नाम रमेश दिया है॥
कितना सुन्दर रूप तुम्हारा, जिसने भी इक बार निहारा।
बरवश वह फिर से आता है, दर्शन करके सुख पाता है॥
मन्द मधुर मुस्कान तुम्हारी, हरे भक्त की पीड़ा सारी।
वाणी में है जादू इतना, अमृत में आनन्द न उतना॥
मर्म धर्म का तुमने पाया, पूर्व पुण्य का उदय ये आया।
निश्छल नेह भाव शुभ पाया, जन-जन को दे शीतल छाया॥
सत्य अहिंसादि व्रत पाले, सकल चराचर के रखवाले।
जिला छतरपुर शिक्षा पाई, घर-घर दीप जले सुखदाई॥
गिरि सम्मेदशिखर मनहारी, पार्श्वनाथजी अतिशयकारी।
गुरु विमलसागरजी द्वारा, देशव्रतों को तुमने धरा॥
गुरु विरागसागर को पाया, मोक्ष मार्ग पर कदम बढ़ाया।
हैं वात्सल्य के गुरु रत्नाकर, क्षमा आदि धर्मों के सागर॥
अन्तर में शुभ उठी तरंगे, सद् संयम की बढ़ी उमंगें।
सन् तिरान्वे श्रेयांसगिरि आये, दीक्षा के फिर भाव बनाए॥
दीक्षा का गुरु आग्रह कीन्हें, श्रीफल चरणों में रख दीन्हें।
अवसर श्रेयांसगिरि में आया, ऐलक का पद तुमने पाया॥
अगहन शुक्ल पञ्चमी जानो, पचास बीससौ सम्वत् मानो।

सन् उन्नीस सौ छियानवे जानो, आठ फरवरी को पहिचानो॥
विरागसागर गुरु अंतरज्ञानी, अन्तर्मन की इच्छा जानी।
दीक्षा देकर किया दिगम्बर, द्रोणगिरी का झूमा अम्बर॥
जयकारों से नगर गुँजाया, जब तुमने मुनि का पद पाया।
कीर्ति आपकी जग में भारी, जन-जन के तुम हो हितकारी॥
परपीड़ा को सह न पाते, जन-जन के गुरु कष्ट मिटाते।
बच्चे बूढ़े अरु नर-नारी, गुण गाती है दुनियाँ सारी॥
भक्त जनों को गले लगाते, हिल-मिलकर रहना सिखलाते।
कई विधन तुमने रच डाले, भक्तजनों के किए हवाले॥
मोक्ष मार्ग की राह दिखाते, पूजन भक्ती भी करवाते।
स्वयं सरस्वती हृदय विराजी, पाकर तुम जैसा वैरागी॥
जो भी पास आपके आता, गुरु भक्ती से वो भर जाता।
'भरत सागर' आशीष जो दीन्हें, पद आचार्य प्रतिष्ठा कीन्हें॥
तेरह फरवरी का दिन आया, बसंत पंचमी शुभ दिन पाया।
जहाँ-जहाँ गुरुवर जाते हैं, धरम के मेले लग जाते हैं॥
प्रवचन में झंकार तुम्हारी, वाणी में हुँकार तुम्हारी।
जैन-अजैन सभी आते हैं, सच्ची राहें पा जाते हैं॥
एक बार जो दर्शन करता, मन उसका फिर कभी न भरता।
दर्शन करके भाग्य बदलते, अंतरमन के मैल हैं धुलते॥
लेखन चिंतन की वो शैली, धे दे मन की चादर मैली।
सदा गूँजते जय-जयकारे, निर्बल के बस तुम्ही सहारे॥
भक्ती से हम शीश झुकाते, 'विशद गुरु' तुमरे गुण गाते।
चरणों की रज माथ लगावें, करें 'आरती' महिमा गावें॥

दोहा– 'विशद सिन्धु' आचार्य का, करें सदा हम ध्यान।
माया मोह विनाशकर, हरें पूर्ण अज्ञान॥
सूर्योदय में नित्य जो, पाठ करें चालीस।
सुख-शांति सौभाग्य का, पावे शुभ आशीष॥

– ब्र. आरती दीदी

आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज की आरती

(तर्जः—माई री माई मुंडरे पर तेरे बोल रहा कागा...)

जय-जय गुरुवर भक्त पुकारें, आरति मंगल गावें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
ग्राम कुपी में जन्म लिया है, धन्य है इन्दर माता।
नाथूराम जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।।
सत्य अहिंसा महाव्रती की...2, महिमा कही न जाये।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
सूरज सा है तेज आपका, नाम रमेश बताया।
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।।
जग की माया को लखकर के....2, मन वैराग्य समावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के....
जैन मुनि की दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा।
विशद सिंधु है नाम आपका, विशद मोक्ष का द्वारा।।
गुरु की भक्ति करने वाला...2, उभय लोक सुख पावे।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्....4 मुनिवर के....
धन्य है जीवन, धन्य है तन-मन, गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रहे निहारे।।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी....2, अनुगामी बन जायें।
करके आरती विशद गुरु की, जन्म सफल हो जावे।।
गुरुवर के चरणों में नमन्...4 मुनिवर के...जय...जय।।